जीवन के रहस्य को समझें : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर 10 फरवरी।

दुःख से छुटकारा पाना असंभव नहीं है। जो दुःख से सदा सदा के लिए आजादी चाहते हैं उन्हें कामनाओं से मुक्त होना होगा। आदमी के पास पांच इन्द्रिय और मन है इन्द्रियों की दुनियां मन को चंचल बनाता है। शांत तालाब में एक पत्थर फेंकने के जिस तरह लहरे बनती चली जाती है ठीक वैसे ही इंद्रियों के विकार मन के तालाब में चंचलता पैदा कर जीवन को समस्याओं से विद्रूप बना देता है। यह बात मंगलवार तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कही।

राष्ट्रसंत ने दुनिया को चर्तुआयामी बताते हुए सभा में प्रश्न उपस्थित किया दुनिया बड़ी रंगीली है इस रंगीली दुनिया में जीकर भी आदमी कामनाओं से कैसे मुक्त रह सकता है? आचार्य महाप्रज्ञ का मानना था कि आज तर्क शक्ति का बहुत अंशों में विकास हुआ है, लेकिन तत्वज्ञान में कभी महसूस हो रही है जब तक तत्वज्ञान के प्रति आकर्षण पैदा नहीं होगा तब तक कोई भी बड़ी उपलब्धि नहीं हो सकती। जीवन के रहस्य को समझने के लिए जीव और अजीव को समझना होगा, तत्वज्ञान जिसका आधारभुत तत्व है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा - शांति की तलाश चाहे कहीं भी की जाये वह अपने भीतर के सिवाय और कहीं नहीं मिलेगी, लेकिन आज का आदमी अशांत वातावरण में रहते हुए शांति पाना चाहता है। चेतना के उर्ध्वारोहण से ही शांति की उपलब्धि होने की बात कहते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा जो जीवन के रहस्य को जाने लेता है वह अपने आप को भौतिक आकर्शणों से दूर कर लेता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा - जो कुशल व्यक्ति हैं उसका प्रमाद कोई सरोकार नहीं होता। प्रमाद में वह रत्त रहता है जो आत्मस्थित होने की कला को आत्मसात नहीं कर पाता। गृहस्थ हो या साधु जिनका अपनी आत्मा पर नियंत्रण नहीं होता उसे अपने आंखों से अपनी दुर्दशा देखने की मजबूरी झेलनी पड़ती है। युवाचार्य महाश्रमण ने प्रवचन के सिलसिले में कहा कि शराब प्रमाद की तरफ धकेलती है, पहले आदमी शराब को पीता है और फिर वह आदत बन जाने के बाद जिन्दगी को लील लेती है। आज सबसे बड़ी चिंता का विषय है कि जैन समाज जिसे त्याग और संयम के संस्कार विरासत में मिले हैं वह भी शराब की गिरफ्त में आ चुकी हे। युवाचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कि जीवन में कोई आदत ऐसी नहीं होती जिसे बदला जाना असंभव हो, आदमी बार-बार भावना करे कि मेरी आदतें बदल रही है तो असंभव भी संभव में बदल सकता है। युवाचार्य महाश्रमण ने प्रमाद के रूपों का उल्लेख करते हुए कहा कि विकथा, हास्य, इंद्रियों का असंयम, क्रोध, मान, माया और लोभ प्रमाद को तो बढ़ाते ही है साथ ही व्यक्तित्व विकास में मुश्किलें पैदा करते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने आलस्य को जीवन का सबसे खतरनाक दुश्मन बताते हुए कहा कि लक्ष्य तभी कदम चुमती है जो लगातार जागरूक रहते हुए चलते हैं।

मुनि विजयकुमार ने मधुर स्वर में गुरु भक्ति गीत पेश किया। इससे पूर्व मुनि दिनेश कुमार ने अपना वक्तव्य दिया। मंच संचालन मुनि हिमांशु कुमार ने किया।

प्रेक्षाध्यान साधना शिविर आज से

बीदासर, 10 फरवरी।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में तुलसी अध्यात्म नीडम लाडनूं के तत्वावधान में बीदासर के तेरापंथ युवक परिषद भवन में आज दिनांक 11 से 18 फरवरी, 2009 तक आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर आयोजित होगा। यह जानकारी आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान प्रभारी कमल दुगड़ ने देते हुए बताया कि आठ दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान शिविर का प्रातः 7 बजे शुभारंभ होगा। शिविर में योगासन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, मंत्रध्यान, अनुप्रेक्षा, लेश्याध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। गौरतलब है कि तुलसी अध्यात्म नीडम के बेनर तले प्रति माह के 11 से 18 तारीख तक ये शिविर आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित होंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार शिविर को लेकर आरक्षण व आवास सहित समुची व्यवस्थाओं को अंजाम दिया जा चुका है।